P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL. -V, ISSUE-II, November-2016

E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता का अध्ययन

सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना है। जिसके लिए शोध अध्ययन हेतु हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय में परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् 300 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा प्रतिदर्श के रूप में किया गया तथा प्रदत्तों के संकलन के लिए डॉ0 विशाल सूद तथा डॉ0 आरती आनन्द (2014) द्वारा निर्मित एवं प्रमाणीकृत उपकरण मानवाधिकार जागरूकता परीक्षण का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा ज. मूल्य का प्रयोग किया गया है तथा आकड़ों के संग्रहण एवं उनकी विवेचना के पश्चात् यह निष्कर्ष प्राप्त हुए की परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता औसत है तथा उनके पारिवारिक स्वरूप (एकल एवं संयुक्त) तथा उनके वर्ग या संकाय (विज्ञान एवं कला) के आधार पर सार्थक अन्तर है।

मुख्य शब्दः परास्नातक विद्यार्थी, मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता , विज्ञान एवं कला वर्ग आदि।

दीवान सिंह राणा
शोध छात्र,
शिक्षा विभाग,
हे0 न0 ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय,
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय),
श्रीनगर, गढ़वाल

उषा धूलिया
संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष,
शिक्षा विभाग,
हे0 न0 ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय,
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय),
श्रीनगर, गढ़वाल

प्रस्तावना

आधुनिक युग विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का है और विज्ञान के द्वारा ही राष्ट्र का विकास सम्भव है तथा संसार में प्रत्येक देश ज्ञान–विज्ञान की उन्नति के साथ–साथ अपने नागरिकों की उन्नति भी करना चाहता है। वह अपने नागरिकों को सुविधायें प्रदान करने के लिए संविधान का निर्माण करता है। संविधान द्वारा ही नागरिकों को सामाजिक सुरक्षा तथा उनके मूलभूत अधिकारों का संरक्षण किया जा सकता है। लोकतान्त्रिक राष्ट्रों की आधारशिला प्रत्येक नागरिकों को प्राप्त अधिकार होते हैं जिन्हे मानवाधिकार कहते हैं। मानवाधिकार व्यक्ति की मूलभूत अवधारणायें है जिसके बिना मानव अपने व्यक्तित्व का पूर्णरूप से विकास नहीं कर सकता है। मानव अधिकार प्रत्येक व्यक्ति के जन्म सिद्ध अधिकार होते हैं। इन अधिकारों का अधिग्रहण किसी संस्था/व्यवस्थापिका द्वारा नहीं किया जा सकता। मानव अधिकार वे हैं जो हमें अपनी पूर्ण क्षमता के अनुरुप विकास करने तथा मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के योग्य बनाती है तथा जो अच्छे मानव अस्तित्व की मांग के लिए आवश्यक होते हैं। वर्तमान में मानव अधिकारों का मुद्दा वैश्विक सरोकार का विषय है । भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) व उसके संशोधित स्वरुप 1992 में भी मानवाधिकारों को विशेष महत्व दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया है कि "राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में मानवाधिकार शिक्षा सभी के लिए आवश्यक है। यह हमारे सर्वांगीण विकास, भौतिक और आध्यात्मिक विकास के लिए आधारभूत् है। मानवीय गरिमा के सम्पूर्ण विकास के साथ–साथ इसकी परिधि में दूसरों के अधिकारों के संरक्षण का भाव हमेशा विद्यमान रहा है। इस पृष्ठभूमि को विशेष रुप से ध्यान में रखते हुए भारत में राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग की स्थापना की गई ताकि समाज के सभी वर्गों में मानव अधिकारों के आदर्श को पुष्पित, पल्लवित व विकसित किया जा सके। प्रस्तुत शोध कार्य में परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों में मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

अध्ययन की आवश्यकता

प्रत्येक राष्ट्र में शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति एवं उसके माध्यम से समाज तथा राष्ट्र में वैश्विक सन्दर्भों का रुपान्तरण एवं उसका सरलीकरण करना है। आज के इस भौतिकवादी युग में शिक्षा ही एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा सामाजिक चेतना, न्याय, एवं मूल्यों के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी भी राष्ट्र तथा समाज के विकास की प्रमुख इकाई मानव है। शिक्षा मानव

जीवन के लिए परिष्कार एवं प्रगति की प्रणाली है इसके द्वारा वर्तमान तथा भविष्य के विकास, उन्नति तथा अपेक्षित परिवर्तनों का आधार तैयार किया जाता है। आज का छात्र कल का नागरिक है और राष्ट्र का संरक्षक है। शिक्षा लोगों के बीच सिद्धान्त, संस्कृति और परम्परा का प्रसार करती है। शोधकर्ता ने मानवाधिकारों के प्रति जागरुकता से सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन उपरान्त यह महसूस किया कि युवा पीढ़ी अपने मानवाधिकारों के प्रति कम जागरुक है जिसके कारण सरकार द्वारा प्रदत्त अनेक क्षेत्रों से सम्बन्धित सुविधाओं का लाभ उठाने से वंचित रह जाते है और जिससे देश की प्रगति, आर्थिक व्यवस्था और सामाजीकरण आदि प्रभावित होती है। किसी भी राष्ट्र में शिक्षा तब तक उपयोगी एवं सार्थक नहीं होगी जब तक कि शिक्षा को व्यावाहारिक रुप न दिया जाय। छात्र मानवाधिकार शिक्षा में आने वाली नवीन समस्याओं से परिचित हो तथा उसके प्रति स्वंय जागरुक सजग तथा सर्तक हो। पूर्व में मानवाधिकारों के प्रति जागरुकता सम्बन्धित कई अध्ययन किये गये है परन्तु शोधकर्त्ता ने अनुभव किया है कि पूर्ववर्ती अध्ययनों में उत्तराखण्ड के सन्दर्भ में परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों में मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता सम्बधी अध्ययन शोधार्थी के संज्ञान में नहीं आया है। इसलिए शोधकर्ता द्वारा इस विषय को नवीन एवं महत्वपूर्ण समझा गया तथा शोधकार्य हेतु चयनित किया गया ताकि परास्नातक स्तर के विद्यार्थी भाविष्य में मानवाधिकारों के प्रति सजग, सर्तक एवं लाभान्वित हो सकें।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

प्रस्तुत अध्ययन से सम्बन्धित पूर्व में कुछ शोध कार्य किये गये है जिनका विवरण निम्न है– कौर, एस0 (2006) ने "माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की मानवाधिकार के प्रति जागरुकता का अध्ययन" किया और पाया कि ग्रामीण छात्रों की तुलना में शहरी छात्रों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता अधिक है। जमवाल, पी0 (2007) ने "हिमांचल प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयी शिक्षकों में मानवाधिकारों के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन" किया और निष्कर्ष प्राप्त किया कि प्राथमिक विद्यालयी शहरी शिक्षकों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता ग्रामीण शिक्षकों से अधिक है। पालीवाल, एन0 (2010) ने "माध्यमिक विद्यालयों में मानवाधिकार शिक्षा पर तुलनात्मक अध्ययन" किया और अवलोकन किया की मानवाधिकारों के प्रति जागरुकता का अध्ययन करने से शिक्षकों एवं छात्रों में सकारात्मक प्रभाव पड़ता है जिसके लिए विद्यालय में मानवाधिकारों को प्रोत्साहन हेतु विभिन्न संस्थाओं को वर्कशॉप,सेमिनार तथा सम्मेलन का आयोजन करें। मित्तल, ए0 (2011) ने "निम्न एवं उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के समाज में मानवाधिकारों के प्रति जागरुकता का अध्ययन" किया और पाया कि उच्च एवं निम्न दोनों ही सामाजिक आर्थिक स्तर के व्यक्ति मानवाधिकारों के संरक्षण के प्रावधानों एवं उपयोग के सम्बन्ध में कम जानकारी रखते हैं। कटोच, एस0के0 (2012) ने "हिमांचल प्रदेश में माध्यमिक शिक्षक प्रशिक्षुओं में मानवाधिकार का अध्ययन" कर निष्कर्ष निकाला कि महिला प्रशिक्षुओं की अपेक्षा पुरुष प्रशिक्षुओं में मानवाधिकारों के प्रति जागरुकता अधिक है तथा शहरी माध्यमिक प्रशिक्षु की मानवाधिकार के प्रति जागरुकता ग्रामीण माध्यमिक प्रशिक्षु से अधिक है। मिश्रा, के0 (2014) , ने "उच्च माध्यमिक स्तर की शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं के मध्य मानवाधिकार शिक्षा के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन" किया और अवलोकन किया शहरी क्षेत्र की छात्राओं में ग्रामीण क्षेत्रों की छात्राओं की अपेक्षा मानवाधिकार शिक्षा के तीनों क्षेत्रों (मानवाधिकार सम्बन्धी विषय वस्तु की जानकारी, मानवाधिकार सम्बन्धी सम्प्रत्ययों एवं सिद्धान्तों की जानकारी और समझ तथा मानवाधिकार की अपेक्षा/हनन सम्बन्धी परिस्थितियाँ की समझ) में अधिक जागरूक है। दयाल, जे0 के0 और कौर, एस0,(2015) ने "पी0एस0ई0बी0 तथा सी0बी0एस0ई0 से मान्यता प्राप्त स्कूलों में कार्यरत् अध्यापकों में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन" किया और निम्न निष्कर्ष प्राप्त किए–(अ) सी0बी0एस0ई0 से मान्यता प्राप्त स्कूलों में कार्यरत् अध्यापकों में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता पी0एस0ई0बी0 से मान्यता प्राप्त स्कूलों में कार्यरत् अध्यापकों से अधिक है । (ब) सी0बी0एस0ई0 से मान्यता प्राप्त स्कूलों में कार्यरत् पुरुष अध्यापकों में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता महिला अध्यापकों से अधिक पाई गई है। शशिकला, वी0 तथा फ्रांसिस्को, एस0 (2016) ने "महिला बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता का अध्ययन" किया और पाया की कला वर्ग के महिला बी0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता विज्ञान वर्ग के महिला बी0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों से अधिक है।

उपरोक्त सन्दर्भित शोध अध्ययनों से विदित होता है कि मानवाधिकारों के प्रति जागरुकता का अध्ययन कई परिप्रेक्ष्यों मे किया गया है, किन्तु कोई भी अध्ययन उत्तराखण्ड राज्य में स्थापित हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) के परास्नातक स्तरीय यथा कला तथा विज्ञान वर्ग के अन्तर्गत प्रथम द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थं सेमेस्टर में पढ़ने वाले विद्यार्थियों पर नहीं किया गया है इसलिए शोधार्थी नें प्रस्तुत विषय पर शोध अध्ययन किया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् महिला एवं पुरुष वर्ग के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों की मानवाधिकार के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. परास्नातक स्तर पर एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की मानवाधिकार के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें

1. परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् महिला एवं पुरुष वर्ग के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों की मानवाधिकार के प्रति जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. परास्नातक स्तर पर एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की मानवाधिकार के प्रति जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अनुसन्धान कार्य विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा अनुसन्धान की सर्वेक्षण (वर्णनात्मक) विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) के तीनों परिसरों (बिरला परिसर श्रीनगर गढ़वाल, एस0आर0 टी0 परिसर बादशाहीथौल टिहरी तथा बी0जी0आर0 परिसर पौड़ी) में परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् 300 विद्यार्थियों (150 विज्ञान वर्ग तथा 150 कला वर्ग) का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है।

अध्ययन हेतु उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा मानवाधिकारों के प्रति जागरुकता को जानने के लिए डॉ0 विशाल सूद तथा डॉ0 आरती आनन्द (2014) द्वारा निर्मित एवं प्रमाणीकृत मानवाधिकार जागरुकता परीक्षण का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत परीक्षण में 50 कथन हैं जिनकी प्रकृति सकारात्मक तथा नकारात्मक है। जिन्हें निम्न तीन आयामों क्रमशः–मानवाधिकार सम्बन्धी विषय वस्तु की जानकारी, मानवाधिकार सम्बन्धी सम्प्रत्ययों एवं सिद्धान्तों की जानकारी और समझ तथा मानवाधिकार की अपेक्षा/हनन सम्बन्धी परिस्थितियाँ की समझ पर निर्मित किया गया है। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर को तीन विकल्पों के आधार पर वांछनीयता के क्रम में सत्य, अनिश्चित और असत्य में विभाजित किया गया है।प्रस्तुत उपकरण की विश्वसनीयता परीक्षण– पुर्नपरीक्षणः 0.67 तथा अर्द्धविच्छेदनः 0.731 है। परीक्षण की वैधता कन्टेन्ट वैलिडिटी, आइटम वैलिडिटी तथा इन्ट्रिजिक वैलिडिटी के माध्यम से ज्ञात की गई है।

सांख्यिकीय प्रविधियां

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा t – परीक्षण का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी संख्या – 1

परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् महिला एवं पुरुष वर्ग के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	संख्या	मध्य–मान	मानक विचलन	t-मूल्य	सारणी में t-मूल्य	सार्थकता स्तर
महिला	157	77.33	3.87	0.88	2.59 1.97	0.01* 0.05**
पुरुष	143	76.94	3.74			

स्वतन्त्रता अंश (df) – 298 पर
t-मूल्य *=0.01- स्तर पर सार्थकता
**=0.05. स्तर प सार्थकता

सारणी संख्या – 1 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि महिला वर्ग के विद्यार्थियों की मानवाधिकार के प्रति जागरुकता का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 77.33 व 3.87 है तथा पुरुष वर्ग के विद्यार्थियों की मानवाधिकार के प्रति जागरुकता का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 76.94 व 3.74 है। परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् महिला तथा पुरुष वर्ग के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता में तुलना हेतु t- परीक्षण की गणना की गई जिसके आधार पर t – मूल्य का मान 0.88 पाया गया जो सारणी में स्वतन्त्रता अंश 298 पर 0.01 विश्वास स्तर पर निर्धारित t – मूल्य के मान 2.59 से कम है जिससे यह कहा जा सकता है कि परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् महिला वर्ग के विद्यार्थी मानवाधिकार सम्बन्धी कार्यक्रमो में रुचि लेते हैं तथा समाज की वर्तमान परिस्थितियों तथा अपने अधिकारों के प्रति सक्रिय रूप से जागरुक है क्योंकि वर्तमान समय में मल्टी मीडिया जैसे समाचार पत्र, टी.वी., तथा दूर संचार के माध्यम से बार–बार महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति सूचनाएँ देते रहते है तथा महिलाओं के साथ हो रहे असमानता पूर्वक व्यवहार के विषय में सचेत करते रहते है। जबकि पुरूषों के प्रति इस दिशा मे सूचनाऐ इतनी सक्रियता से नहीं दी जाती है। अतः दोनों समूहों में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पना संख्या – 01 परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् पुरुष एवं महिला वर्ग के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता " 0.01 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् महिला एवं पुरुष वर्ग के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता का दण्डरेखीय चित्रण निम्नवत् प्रदर्शित है।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL. -V, ISSUE-II, November-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् महिला एवं पुरुष वर्ग के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता का दण्डरेखीय चित्रण

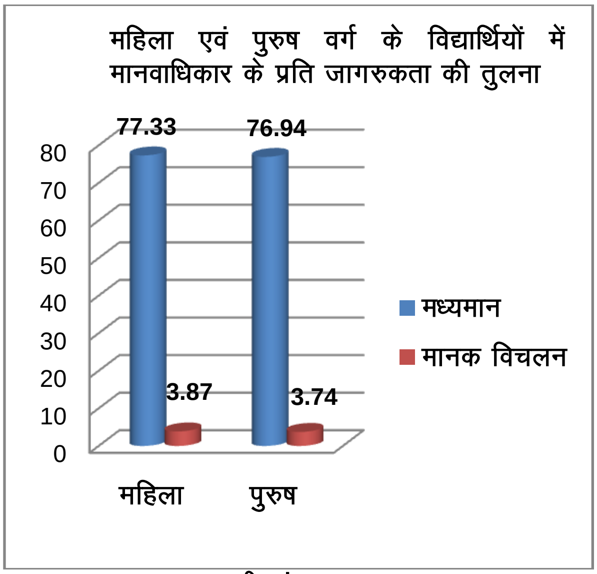

सारणी संख्या – 2
परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t- मूल्य	सारणी में t- मूल्य	सार्थक–ता स्तर
विज्ञान	150	78.58	3.94	6.91	2.59 1.97	0.01* 0.05**
कला	150	75.71	3.27			

स्वतन्त्रता अंश (df) – 298 पर
t- मूल्य *= 0.01- स्तर पर सार्थकता
**=0.05- स्तर पर सार्थकता

सारणी संख्या 2 – के विश्लेषण से विदित होता है कि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमश 78.58 व 3.94 है तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों की मानवाधिकार के प्रति जागरुकता का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 75.71 तथा 3.27 है। परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता में तुलना हेतु t- परीक्षण की गणना की गई जिसके आधार पर t- मूल्य का मान 6. 91पाया गया जो सारणी में स्वतन्त्रता अंश 298 पर 0.01 विश्वास स्तर पर निर्धारित t- मूल्य के मान 2.59 से अधिक है। अतः दोनों वर्गों के विद्यार्थियों में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। जिससे यह कहा जा सकता है कि परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी मानवाधिकारों के हनन से सम्बन्धी मामलों में स्वप्रेरणा रखते हैं तथा मानवाधिकारों से सम्बन्धित सामाजिक क्रिया– कलापों के प्रति सक्रिय रहते हैं। सम्भवतः यह इसलिए हो सकता है क्योंकि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी कक्षा अध्ययन के साथ–साथ प्रयोगशाला मे कार्य करते है तथा अपने प्रयोगिक कार्यो को पूरा करने हेतु जैसे–हरबेरियम बनाना आदि के लिए शैक्षिक भ्रमण भी करते है जिससे वे अधिक लोगों के सम्पर्क में आते है और उनसे चर्चा करके मानवाधिकार के प्रति अधिक सचेत हो जाते है। अतः शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पना संख्या – 2 परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता 0. 01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता का दण्डरेखीय चित्रण निम्नवत् प्रदर्शित है।

परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता का दण्डरेखीय चित्रण

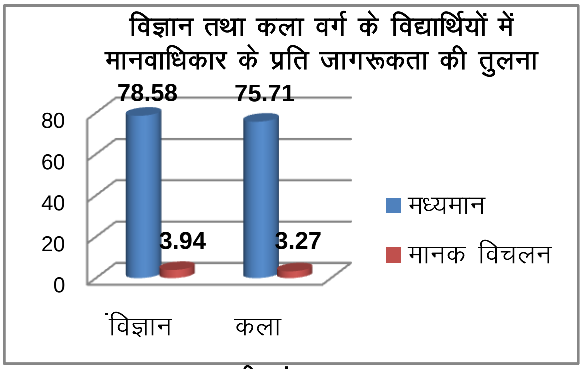

सारणी संख्या – 3
परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन

परिवार का स्वरूप	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t- मूल्य	सारणी में t- मूल्य	सार्थकता स्तर
एकल	198	77.59	3.89	2.93	2.59 1.97	0.01* 0.05**
संयुक्त	102	76.27	3.63			

स्वतन्त्रता अंश (df) – 298 पर
t-मूल्य *=0.01- स्तर पर सार्थकता
**=0.05- स्तर पर सार्थकता

उपरोक्त सारणी संख्या 3 – से विदित होता है कि एकल परिवार के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 77.59 व 3.89 है तथा संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 76.27 तथा 3.63 है। परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता में तुलना हेतु t- परीक्षण की गणना की गई जिसके आधार पर t- मूल्य का मान 2. 93 पाया गया जो सारणी में स्वतन्त्रता अंश 298 पर 0.01 विश्वास स्तर पर निर्धारित मान 2.68 से अधिक है जिससे यह कहा जा सकता है कि परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् एकल परिवार के विद्यार्थी मानवाधिकारों के

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL. -V, ISSUE-II, November-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

संरक्षण के प्रावधानों एवं उपयोग के सम्बन्ध में संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक जानकारी रखते हैं। इससे प्रतीत होता है कि संयुक्त परिवार के विद्यार्थी अपने परिवारिक कार्यो के उत्तरदायित्व के निर्वाहन में व्यस्त रहने के कारण सामाजिक गतिविधियों में भाग नहीं ले पाते है जिसके फलस्वरूप वे मानवाधिकारों से सम्बन्धित कार्यक्रमों से वंचित रह जाते है, तथा एकल परिवार के विद्यार्थियों के माता–पिता स्वाभाविक रूप से अधिक शिक्षित होने के कारण अपने बच्चों के शिक्षा के प्रति जागरूक रहते है। अतः शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पना संख्या – 3 ''परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता'' 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता का दण्डरेखीय चित्रण निम्नवत् प्रदर्शित है।

परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता का दण्डरेखीय चित्रण

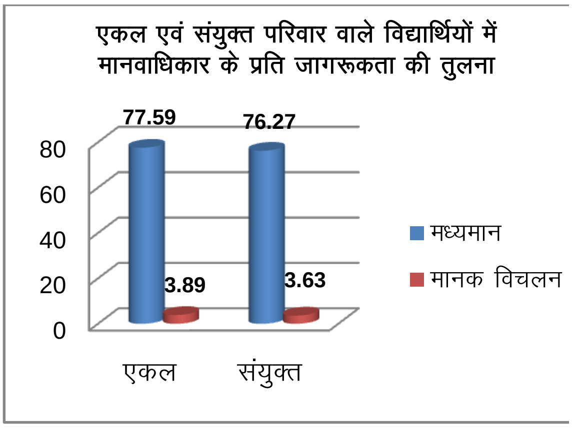

निष्कर्ष

संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के आधार पर शोध अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त किए गए हैं–

1. परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् पुरूष एवं महिला वर्ग के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अतः दोनों समूहों में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता औसत रूप से है तथा मानवाधिकार से सम्बन्धित कार्यक्रमों को महत्व देते हैं।
2. परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर पाया गया है जिसमें कला वर्ग के विद्यार्थी मानवाधिकारों के हनन एवं उनके संरक्षण के सम्बन्ध में औसत रूप से कम जानकारी रखते हैं क्योंकि वे सक्रिय रूप से मानवाधिकारों से सम्बन्धित क्रियाकलापों में भाग नहीं लेते हैं।
3. परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् एकल एवं संयुक्त पारिवारिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि संयुक्त परिवार वाले विद्यार्थी मानवाधिकारों के संरक्षण एवं प्रावधानों के सम्बन्ध में कम जानकारी रखते हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता के सम्बन्ध में इसकी जानकारी औसत है परन्तु वर्तमान परिस्थितियों में लोगो के मानव अधिकारों का शोषण, हन्न एवं उनके प्रति हो रहे अत्याचारों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि यह जागरुकता सिर्फ जानकारी तक ही सीमित है।इस जागरूकता को व्यवहारिक बनाने के लिए वर्तमान में मानवाधिकार शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा किसी भी राष्ट्र के नागरिक एक सभ्य समाज की स्थापना कर सकें और अपने आधिकारों के प्रति जागरूक, सजग तथा सर्तक हो सकें।

सुझाव

मानवाधिकार शिक्षा को विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्तर पर पाठ्यक्रम में सम्मलित किया जाना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को समय–2 पर मानवाधिकारों से सम्बन्धित कार्यक्रमों जैसे–सेमिनार, वर्कशॉप, सम्मेलनों में सक्रिय रूप से सम्मिलित होकर अपने आप तथा समाज को जागरूक कर सकें। जिससे भविष्य में मानवाधिकार के उल्लंघन को रोका जा सके तथा साथ ही विश्व बन्धुत्व की भावना को साकार रूप प्रदान किया जा सकें।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध पत्र में उच्च शिक्षा जगत के परास्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता सम्बन्धी विचारों को जानने एवं उनको उचित दिशा प्रदान करने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार युवा वर्ग को अपने आने वाले समय के लिए सजग एवं जागरूक बनाया जाए जिससे वे राष्ट्र, समाज तथा अपनी उन्नति करके सन्तुलित एवं अच्छे समाज की स्थापना कर सकें। प्रस्तुत शोध कार्य के परिणाम शिक्षाशास्त्र, समाजशास्त्र, विधिक, मनोविज्ञान तथा दर्शनशास्त्र आदि विषयों में रूचि रखने वाले शोधकार्यों के लिए उपयोगी रहेंगे ऐसी आशा की जाती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बेस्ट जॉन डब्ल्यू0, (1982): "रिसर्च इन एजूकेशन", प्रेन्टाइस हॉल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लि0, न्यू दिल्ली, 1982।
2. दयाल, जे0 के0 और कौर, एस0, (2015) : "पी0एस0ई0बी0 तथा सी0बी0एस0ई0 से मान्यता प्राप्त स्कूलों में कार्यरत् अध्यापकों में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन" इन्डियन जरनल ऑफ रिसर्च,आई0 एस0एस0एन0–2250–1991, 4 (4), अप्रैल 2015, पृ0 4–6

3. गैरिट, एच0 ई0(1997) : शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना। जमवाल, पी0 (2007) : "हिमाचल प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयी शिक्षकों में मानवाधिकार के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन" लघु शोध एम0 फिल0, अलगप्पा विश्वविद्यालय, तमिलनाडु, 2007 पृ0 65–66
4. कटोच, एस0के0 (2012): "हिमांचल प्रदेश में माध्यमिक शिक्षक प्रशिक्षुओं में मानवाधिकार का अध्ययन" हिमालयन जनरल ऑफ कान्टेम्पोरेरी रिसर्च आई0 एस0 एस0 एन0 2319 – 3174 वाल्यूम (1), अंक–2, जुलाई –दिसम्बर (2012) पृ0 23–24
5. कपूर,एस0के0 (2010): "मानवाधिकार एवं अनतर्राष्ट्रीय विधि",सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी इलाहाबाद,2010,पृ0 690–691।
6. कौर,एस0 (2006) : "माध्यमिक स्तरीय छात्रों में मानवाधिकारों के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन", लघु शोध प्रबन्ध एम0 फिल0 हिमाचल विश्वविद्यालय शिमला, पृ0 94–96
7. कुलश्रेष्ठ, एस0 (2003): "अन्तर्राष्ट्रीय कानून व्यक्ति और मानवाधिकार" ए जर्नल आफ एशिया फॉर डेमोक्रेसी एण्ड डेवलपमेन्ट मुरैना, वाल्यूम (3), अंक 4, अक्टूबर–दिसम्बर 2003 पृ0 289।
8. लाल ,आर०बी० (2013): भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ आर0 लाल बुक डिपो मेरठ, 2013
9. मित्तल, ए0 (2011): "निम्न एवं उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के समाज में मानवाधिकारों के प्रति जागरुकता" शिक्षा चिन्तन शैक्षिक त्रैमासिक शोध पत्रिका, त्रिमूर्ति संस्थान कानपुर, वर्ष (10), अंक–37, जनवरी–मार्च 2011, पृ0 27–34
10. मिश्रा, के0 (2014): "उच्च माध्यमिक स्तर की शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं के मध्य मानवाधिकार शिक्षा के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन" शिक्षा चिन्तन शैक्षिक त्रैमासिक शोध पत्रिका, त्रिमूर्ति संस्थान कानपुर, वर्ष (13), अंक–49, जनवरी–मार्च 2014, पृ0 19–22
11. पालीवाल, एन0 (2010) : माध्यमिक विद्यालयों में मानवाधिकार शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन, नई शिक्षा राष्ट्रीय शैक्षिक मासिक पत्रिका, जयपुर वर्ष (60), अंक–5, दिसम्बर, 2010 पृ0 21–24।
12. शर्मा, आर0ए0, शिक्षा अनुसन्धान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर0 लाल बुक डिपो मेरठ, 2013
13. शशिकला, वी0 तथा फ्रांसिस्को, एस0 (2016) : "महिला बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों में मानवाधिकार के प्रति जागरूकता का अध्ययन" इन्टरनेशल जरनल ऑफ टीचर एजूकेशन रिसर्च (आई0 जे0 टी0 ई0 आर0) वॉल्यूम 5, नं0 3, मार्च–अगस्त 2016, पृ0 45–49] www.ijter.com